तात्पर्य

कुशल राजनीतिज्ञ दुर्योधन ब्राह्मणश्रेष्ठ सेनाधिपति द्रोणाचार्य के दोषों को इंगित करना चाहता था। अर्जुन के श्वसुर (द्रौपदी के पिता) राजा द्रुपद और द्रोण में परस्पर राजनीतिक द्वेष था। इस कारण द्रुपद ने एक महायज्ञ का आयोजन करके द्रोणाचार्य का वध करने में समर्थ पुत्र की उत्पत्ति का आशीर्वाद प्राप्त कर लिया। द्रोण यह भलीभाँति जानते थे, पर फिर भी जब द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न युद्ध-शिक्षा के लिए उनकी शरण में आया तो उदार विप्र द्रोण ने उस पर अपने सम्पूर्ण युद्ध-रहस्य उद्घाटित करने में तनिक भी संकोच नहीं किया। अब, कुरुक्षेत्र के युद्ध में धृष्टद्युम्न ने पाण्डवों का पक्ष ग्रहण किया एवं द्रोणाचार्य से प्राप्त विद्या के आधार पर उसी ने पाण्डव सेना की व्यूह-रचना की। दुर्योधन ने द्रोणाचार्य की इस त्रुटि का निर्देश किया, जिससे वे युद्ध में सजग और दृढ़ रहें। उपरोक्त कथन से उसका यह भी अभिप्राय है कि युद्ध में अपने स्नेहभाजन शिष्यों (पाण्डवों) के प्रति वे कहीं इसी प्रकार दयाभाव न दिखा बैठें। अर्जुन विशेष रूप से द्रोणाचार्य का सर्वाधिक प्रिय एवं प्रतिभावान् शिष्य था। दुर्योधन ने चेतावनी दी कि युद्ध में ऐसी उदारता का व्यवहार परिणाम में पराजयकारी सिद्ध होगा।

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः।।४।।

अत्र =इस पाण्डव सेना में; **शूराः** =शूरवीर; **महेष्वासाः** =महान् धनुर्धारी; **भीमार्जुनसमाः** =भीम तथा अर्जुन के समान; **युधि** =युद्ध में; **युयुधानः** =युयुधान; **विराटः** =विराट; **च** =भी; **द्रुपदः** =द्रुपद; **च** =तथा; **महारथः** =महारथी।

अनुवाद

इस पाण्डव सेना में भीम-अर्जुन के समान अनेक महान् धनुर्धारी शूरवीर योद्धा हैं, जैसे महारथी सात्यकि, विराट तथा द्रुपद आदि।।४।।

तात्पर्य

यद्यपि युद्ध कला में द्रोणाचार्य की महती शक्ति के आगे धृष्टद्युम्न कोई विशेष व्यवधान नहीं था, पर शत्रुपक्ष के दूसरे बहुत से योद्धाओं से भय की सम्भावना थी। इसी से दुर्योधन ने उन्हें अपने विजय-पथ के महान् बाधक बताया है, क्योंकि उनमें से प्रत्येक योद्धा भीम-अर्जुन के समान दुर्धर्ष था। भीम और अर्जुन के बल का दुर्योधन को पर्याप्त ज्ञान था। इसलिए उसने अन्य महारथियों की उनसे ही तुलना की है।

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुंगवः।।५।।

धृष्टकेतुः =धृष्टकेतु; **चेकितानः** =चेकितान; **काशिराजः** =काशीनरेश; **च** =तथा; **वीर्यवान्** =अत्यन्त बलवान्; **पुरुजित्** =पुरुजित्; **कुन्तिभोजः** =कुन्तिभोज; **च** =तथा; **शैब्यः** =शैब्य; **च** =तथा; **नरपुंगवः** =पुरुषों में श्रेष्ठ।